

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 इका ॐ वलि ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 १ सर्वसामि कु नर ॥ ३ रुट्टा ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 चन्दमलार्थ नवायवा ॥ लकोमानिधवी ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इका ॐ वलि ॥
 सा सा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 कु नर ॥ ३ रुट्टा ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 निता ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

रत्ननीलश्रीमूगसंकाशं चकवर्कं तिलोवर्णं पिङ्गवर्णं वीरुक्कणश्च मङ्गुरुटकधानं । उममूयवा
य हर्षं विन्दुकायालमूदिनं यगावृणमहाधव ध्यायनं कुरुयालकी ॥ १ ॥ गजवर्कं गनसाय
ध्वगवर्णं वयुजुजा । मूललपुक्कभनार्कं ध्यायनं गनध्वनं ॥ २ ॥ मयूगममावृष्णकि
हर्षं मरुवलाङ्कवर्णं मङ्गज वट्काथनमामर्हं ॥ ३ ॥
रत्नमाधुप्रलाय ॥ वंद्यसदासकलिकोलिकमावृणं कुरुध्वननकयाल
रत्नमासहासवयाय ॥ मिथवादि ॥ लावन्मसधितगन वट्कादला म्मानसानु
लानिर्वदम ॥ ममाद ॥ कयूलह्वनरुर्जवनकद्वक ॥ मारुक्किता हं मनिर्सेय
नममिरीम ॥ १ ॥ नासार्कटसय विवर्णमादिमङ्ग कामा उर्वकतवन्द्यकला

वर्गणी सौंदर्यसानसमूदायकधराधात्मा मारुक्किता हं मनिर्सेयलामामिरीम
॥ २ ॥ थाहिद्यमाननजीवन ॥ म्माभरं कर्णनलका कसिवातनल्यकः
जितं । श्रीउरुनाधियविशुडवन कविर्नमार्गुक्किता हं मनिर्सेयनमामिरीम
॥ ३ ॥ कम्पयसलुत ॥ दादुयदात्मजाया ॥ दाणस्यलिरिवर्तनववादिः
मर्तं । दाल्मयुहाययनिवर्णितदृष्टं मारुक्किता हं मनिर्सेयलामामिरीम ॥
४ ॥ हमायलनिवसिर्गवगदाध ॥ श्रीना नायर्णस्यवनलम्वजवन्दनीय
वियार्थताविनिर्गववका सुनामि ॥ मारुक्किता हं मनिर्सेयलामामिरीम ॥

दुं नमः॥ कोमनी नमः॥ ॥ अथ
 तस्य च कोमि कोमानी राजकु
 मं कोमानी सदानमूक सदैव सा कि
 कनं दुर्गं ॥ ॥ ततो नृनृमानर्गं ॥
 कना ही न्यासः ॥ अथ यानि द्रवा
 नं अकि निर विवेद्या क्व कनाय
 म्नि अकय ॥ द्रव्या दि य उ ही ॥
 नं कोमि र्दुर्गं र्गना न नि धान
 र्गो ड्या क्व विवे क र्गं र्गो र्गं उ अ
 र्गो ए न भ अथाना म् रवी क्व र्गो
 कि निर विवे र्गो अमल विद्या
 नं अ र्गं मना दिवा ॥ नं म नं र्ग
 उ र्गं ॥ ॥ ग र्वा नं म द कि न
 नं र्ग द र्ग ॥ ॥ नं वा नं य सि म ॥
 नं र्ग अ न ॥ ॥ नं या नं वा द
 र्गो ॥ ॥ नं उ नं म अ वा न ॥ द र्ग
 द र्गो ॥ ॥ म न व म र्गो ए न
 मि का या नं क या न म र्गो नं र्ग य
 न ॥ ॥ नं अ र्गो ड्या सि सि नी ना
 थ ड्या अ र्गो र्गो न न ना थ या

दको द र्गो मि ॥ ॥ क या ल म् र्ग
 नं क व च म र्गो न अ र्ग म र्गो ए ॥ ॥
 अ न ॥ नं अ दि रु र्ग न क व र्गो
 न क व र्गो अ न नि ला ल सा व र्गो
 उ ड्या क्व ना म् र्गो क का र्ग न ए ॥ द
 ला र्ग र्ग य द्या थ ना ए ड्या वा ति र्गो
 र्गो ल थ र्ग म् र्गो ॥ ॥ अ र्गो यानि द र्गो
 ॥ ॥ र्गो नं ड्या र्गो ॥ ॥ नं र्गो ड्या र्गो
 र्गो र्गो ड्या र्गो नं ॥ ॥ म् र्गो म र्ग
 व ति सी न अ र्ग म र्गो नं र्गो च न
 न ॥ अ र्गो न ॥ शि द्वा न कि न क म् र्गो

अ वा द थ व र्ग व र्ग म् र्गो व
 नि स र्ग र्ग न या थ ॥ ॥ वी न व र्ग
 र्गो व र्गो नं ॥ ॥ व नि स र्ग य र्गो
 र्गो ॥ ॥ क र्ग या द म र्गो व नि द
 र्गो र्गो नं ॥ ॥ अ न नि क
 र्गो र्गो नं ॥ ॥ ए व थ व र्ग य र्गो ॥ ॥

ॐ धं ह्रीं क्लीं दक्षिण ॥ १ ॥
या नमस्तु ॥ २ ॥

[illegible]

नक्षीयवीतः दधुनेन दधना,
 र्क, इति लोहस्य मूर्ति, कनकं
 दधमाणा, मललेहकं यनं रुन
 इति विद्वद्वन्द्यं मन्त्रागच्छेत्तर्पणं
 अथ गन्धद्वयं दधनीयं कीर्तनी
 त्वागदत्ता विभक्तं सर्वमपि दधेत्
 मस्तु ॥ ॥ ॐ नित्यं नित्यं दधेत् ॥

तमीव क्रमीधवीदजा ॥ ॥ नं०
 दंश्मन्नाथ ॥ आह ॥ ॥ नं० चं०
 क्रमीनीअनाहु ॥ स्त्राहा ॥ आवाह
 न ॥ ॥ अना ॥ इंसहाह ॥ आहनी
 धवी ॥ यीतवर्द्ध ॥ चहु ॥ मुआ ॥ विद्धम
 श्राव ॥ युक्त ॥ क्रं ॥ अथ ॥ श्री ॥ ननाम
 रुं ॥ ॥ नं० ॥ वः ॥ अहु ॥ यरु ॥ ॥
 अर्थ ॥ नं० ॥ नया ॥ क्र ॥ ॥ ॥ नं० ॥ नं०
 ताउन ॥ अने ॥ ॥ ॥ नं० ॥ अं० ॥ य
 यात ॥ क्र ॥ व ॥ दं ॥ ह ॥ अं० ॥ व ॥ नं० ॥ व
 क्रमीनी ॥ याद ॥ कां ॥ ॥ ॥ नं० ॥ अं० ॥ हि
 गाई ॥ क्र ॥ नवा ॥ य ॥ ॥ ॥ नं० ॥ व ॥ वि

मदयेन ॥ कदापि वनुदंसे वमनि
द्वयं रुमभरकं ॥ स्वनेमाना शिनेन
स्य शम्भुवा धनवाकनी ॥ वक्ष्मि
नभं दवा यावत्या वावलेन्द्रि
महिन्नु भं दवीश, अमि द्या मन
सायदि ॥ अमनदुर्धर ॥ ॥ नं द
वदि धा भति द्या अनी ३ ॥ ॥ अम
नु अमवकु मरुता नं जा शित पम
समयका दं द्या एक दमला वा मः
हि मा ग वि कताननं विंशति द्या
किरु नं द्या अवीमसर्दी अमि नः
जसि मा मन द्या स अ विरु रुमन
कार्मुकः का रुमं वा नं रुमं यी
दं रु द्या लि द्दि नं ॥ मरुति मिति
अर्य अरु द्दि लि सा क नं र्थ अम
द्वी म् ई द्दि पदी स, द्दुर्धकं रु द्द
धनः काले द्या स रु अम व न्द सा
नं द्या वी स रु स र्द क रु ल न म
नं ना द्या क्क द्या वि नः ॥ न
माला न ले व द्दु याव त्या द्या व ले
मिति धन द्या स न रु रु मदि

[illegible][illegible]

[illegible]

ॐ ॥ ॥ गन्धर्वान् यन्त्रं लोभं
 कीर्त्तयन्ति ॥ ॥ अथ गन्धर्व
 विहङ्गा योऽपि गान् माहि का
 विभङ्ग विनयान् मन्त्रं ॥ सन्धर्व मन्त्रं
 माया केका मुद्रि य ॥ ॥ ॥
 अथार्थे रक्षा रक्षन् न दानिना
 नववनिहा दकिने ॥ ॥ ॥
 दिद्रक्षा कर्त्तव्यः ॥ अथ मन्त्रं ॥ ॥
 सक्तं ॥ ॥ अथानेकाय ॥ ॥
 कामान् अन्धं ॥ मन्त्रं ॥ ॥
 दक्षिणा विद्य ॥ ॥ कर्त्तव्यं ॥ ॥
 या दानं ॥ ॥ ॥ लिङ्गं
 न कीर्त्तयन्ति ॥ ॥ नव
 निनमन्तं ॥ ॥ वने वायु
 दक्षिणा यो ॥ ॥ कोमान्
 शम्भु रो ॥ ॥ ॥
 लेक मको गान् अथानेकाय
 ॥ ॥ सन्धर्व ॥ ॥
 मिष्टान्नं न ॥ ॥ ॥
 कोवान् ॥ ॥ ॥
 दक्षिणा यो ॥ ॥ ॥

वतुर्द्रुगय मा गणी हंस कविमानका सोम दूया विनामही। वृक्ष कश्चिदयमाला

रथान्धानदृहासा दूविद्युविगतवांथानदं सु कनाला कषुहा वक्रनगु वनर
धिनधसा दूर्धकायालहसा सोम्या दूर्धवका सनद गणिनिता सर्वसी गल्ययका
वकाकमार्ग सैकाहविहननसिता यादुसी नृक्षगकि॥

नमादयो॥ सुनाविधि र्धुर्धवा उवनमालिनी जयखीमालिनी दवीनिर्मलमलना
गनि॥ स्नानगकि पुत्रुर्धवीवृद्धि स्त्रीनजवर्द्धनी॥ जननी सर्वेष्टतना सीसात्रसिन्धुव
स्किना॥ मातावीनावलीधवीका वृष्णकृत्रुवत्सल॥ नंद जयनियममनखनिर्वाण सीष्टनगजा
मयी लोनिमृतावाकृत्रुवाकना स्नानगकि सुमिका किया डं मुद्रिभरवायन ४ मुकनाल
न्यसनक कृगुलाकावृषा प्ररुनी दगकि सुससी नीयस॥ हांसा सुनाकावृषा गिनि
वाश्व सुनामा यवाप्रायगो दीमना रयास्त्रिका विन्दवृषावधूनाद्वर्वदा कृत्स्निकाणन

[illegible]

दो ४० वधूत ॥ श्री श्रीमान्दिव्यवत्सल ॥ ॐ सुदिक्कनकाकावाहो यनमकुल
 था ॥ गम्बनि ॥ सु ४ सिद्धमानविभु ४ ॥ द्यावापृथिव्यान्वा ॥ पुनः ॥ ह्रीं ॥ अर्पुवर्वा
 वा ॥ दिग्गुह्यानिवासिद्धिवा ॥ गम्बनि ॥ मां ॥ मा ॥ प्रका ॥ त्वं ॥ सिद्धा ॥ क्रिया ॥ मंगला ॥ सिद्धि
 लब्धा ॥ विद्महि ॥ सु ४ सु ४ नि ४ मि ४ ॥ सा ॥ श्वता ॥ रया ॥ यना ॥ खनिना ॥ वा ॥ यली ॥ ॐ ॥ वृद्ध ॥ विवि
 नाम ॥ गिरि ॥ नि ॥ का ॥ द ॥ का ॥ नि ॥ नि ॥ द ॥ वि ॥ नि ॥ द ॥ नू ॥ यु ॥ वा ॥ ध ॥ नि ॥ ॐ ॥ सिद्ध ॥ वल ॥ यना ॥ काम
 ह्रीं ॥ यनि ॥ मा ॥ वि ॥ ध ॥ श्व ॥ नि ॥ ख ॥ स ॥ सु ॥ ह्रीं ॥ वा ॥ दी ॥ न ॥ मा ॥ ना ॥ अ ॥ ज ॥ म ॥ ॐ ॥ द ॥ व ॥ गु ॥ ध ॥ व ॥ नि ॥ द ॥ स
 न ॥ मा ॥ न ॥ ॐ ॥ न ॥ क ॥ न ॥ क ॥ ना ॥ सु ॥ न ॥ क ॥ व ॥ लि ॥ ॐ ॥ सर्व ॥ व ॥ पु ॥ वि ॥ द ॥ ना ॥ व ॥ लि ॥ दी ॥ न ॥ क ॥ व ॥ ज

कजाल नै गान सौ सी मन्त्रानु छैं ॐ ह सवि द्वायं सी नी द्वाय ४ हं लुटिल यनि
 मियदि मागानि मु द्वा हौ हौ गान य सौ वि । सर्व गगन मान । श्री महा ह्वायाग
 यिथ न हौ त्वं जया त्वं व विजया । जयं या त्वं य त्वं वा डि गा । नृ दु ग । महा
 मा हा मा या य गं हौ नो ड व ना लि शु नू स मा ह नि । ह्यं न वा त्मा न व द स्य
 आत्म ग या ना सृ गा । म क मा र्मा नू र्ग मि ति सि वा न । याना नू न क ४ सु र
 क ४ व र्म यु द्वा मा । शौ द वि य शु मृ न दि य दाना । ह्यं त्वं ४ मृ लु ह ह नै ।
 जं न क ज न्म वि ज न्म नू । व ह र्म व य द्य क ज न्मा ड व ह्व त्वि ना र्म ४ शु र्म ४ रु त्म
 ४ ज न्म

ये स (श्रियं) श्रि अलि रु ल्पु यिथ । मुं मन्त्रा वि द्वा व गी द्वा सि रि । मृ लु की काल
 का या ली रि दि द्य व यानु नू र्म ४ श्रौ व ४ स्र वृ थ का म लु धा रि नि न र्म ४ व
 नू र्व द्वा ग धा रि नि । कौ नै ला द्य का र का रि नि न कौ को ल मा र्ग । ग मि । हू ना
 ग ज ह्वा व वी ग म र व ला व धू न । कौ य न मां न द द्या यि नि । नै डौ का व न म ४ स्वा
 हा स्र धा का व वा य नू व नू का व हू का नू रु र्म का व जा नि रि न र्म ४ र्म ना द्वा वा
 द्वा न ड हौ लु द्य या धि का का ह्यं श्रौ । वा म र्म रु क लि ना वा क मृ ग व ली जा

हावाधितिः संसृत्य यादवविन्दद्वयं न **कुं** महाकालिकालाग्निनजयुग्म
कोकन्दगमविन्दवृक्षचन्द्रार्कव्यायुर्वैमोसिमामालिसत्यश्रीकिडकुसल्य
उत्रेऽर्धसं **कुं** कनवीनगमगाननाथवलि **कुं** मुहाटवीयवर्ताद्यानवन
नमिन्नकुदस्वास्तिक **कुं** कनवीनगुहवायिनि **कुं** वहुदगुहुवनाशनवा
सिनि **कुं** कनाटुलाकुनिद्यावणि **कुं** उजमनास्तिक **कुं** वादुकाकुम
लि **कुं** गदिगन **कुं** नमहाकालं लीगम **कुं** वीयदकादिमगु **कुं** लार्धमहाह
नसुसका **कुं** यीयागुवीनावलीग **कुं** नागियरासा **कुं** वीवेंका **कुं** धीरवु **कुं**

दिवालिगमसर्नमगुलाकु **कुं** निर्वोणयागमवलीगकिरि **कुं** सुदस्य
रिकसंकाग **कुं** कागयनमनिर्वोणमहावालय **कुं** काथना **कुं** आरुधिका
वयनमविद्यम **कुं** सिकासलककलालकुना **कुं** मादमदनसगु **कुं** मीसाग
मीथागिनीसिद्धवीदिनं सगनारिनदिने **कुं** धीयिद्यामुयाद्यगु **कुं** यथे **कुं** यव
कुं यादासिधनसर्वार्थसंवाधसं **कुं** स **कुं** सर्ववीर्वाविका **कुं** नवी
कुं नववसगव **कुं** गगा **कुं** ह **कुं** आरुथिना **कुं** ह **कुं** लिगमकाग **कुं** नवविकसस्वा

यथा धिगिव डमङ्ग गन्मान कालिक कुलसुहागहन वायिनि मालिनी
 सुवनासु सुसमानदिता देववलावदिभा रूपा नाना कस्य सुमा
 मिनि ॥ ॥ मालिनी सुवना डी उ अदिनाथ वना निर्न ॥ यथा सा लाम
 मङ्गवाणी सुन सुवाने दथु निता ॥ ॥ (गपयय नमन विद्या लाम वाने व
 र्ये विवदिना ॥ अहं कावा प्रिवृ यना दारिका नाने दा ययन ॥ नव सुगाम
 भवती र्ने नथ वानम दा नाना ॥ नमालिनी गविनि विद्या मिर्गो यनम स्य नी
 वदना सिद्ध नाथ स्या लिं ग सु लिं ग नु विद्या ॥ पूर्व यानि नाथ ॥ ईश भेदा

साधन सावनात् ॥
 समाप्त ॥

॥ बहुविधानि साधनानि कादिशब्द मालिनी सुव

रक्षकिनि इव वि ॥ लक्ष्म्यमर्जग ॥ वलिविया ॥ सुधयथा ॥ अत्रथि युगि स्फा ॥ ईग
 यने ॥ वाक्याय ॥ अद्यवा वाद ॥ अद्यादि ॥ नैर विद्यायी ॥ मरुदाय वाक्यमं
 लसादिर्विजयसमस्तवदवाङ् कर्था सीगु सस्तुर्वे नका कृष्ण तथा चिरी युनि
 नीनामदाहर्म ॥ धोनिर्क दवधय य चकविरु सस्तुकि नागल लनयथा नृत्वा य
 नयनगन दिरा गतगनमरुत्सारा सीदना विविकायर्म सर्वयाय विनिर्म की स
 र्वकामस सीनिर्न घनधावा अद्युवादि थोतल द्वा सुर्मगल नद पुवमुनरु
 ना यावत्सखा विद्यायन नावदु वे सह सानि वसद्वीन केयूथ ॥ अमुको य नि ॥

ॐ नमामहासेनवाय ॥ श्रीसेनवडवाव ॥ नमस्यामिमहामाया दवी त्रियुवनसेनवी ॥
 यस्याऽस्य मातुः सर्वसिद्धियुगायत ॥ १ ॥ अस्त्ववकास्त्रिगायत्री मुखस्ता
 धाममध्यगा ॥ इहवऽस्य गगानिर्ह्य सर्वदधववस्त्रिगा ॥ २ ॥ नमामिसर्व
 दवीना मातयाः सर्वकामदा ॥ नमोऽस्तुत महामाया सिद्धिदगावगाविनी ॥ ३
 ॥ मातृत्रिगयमध्यस्तु यद्वका धामवाशिनी ॥ सदाका सचनदवी मयूदागिस
 मच्चिन् ॥ ४ ॥ अदिथादगावकास्तु सेनवानन्दवृत्तिणि ॥ ॐ अकचटगयव
 णी मर्कऽसदाधृति कभवन्न ॥ ५ ॥ त्वष्टृष्टिर्ह्यस्त्रिगिऽधेव त्वष्टृत्ता कुवि
 नाशिनी ॥ महायलयसर्मऽधऽशकविहसिगानना ॥ ६ ॥ त्वमायुऽयवः

माशीच सीगामविजयावहा ॥ ॐ कौधीवाजवृत्तल ॥ गवतीगयधाविणी
 ॥ ७ ॥ कौरुट्क कर्णदयदवी कौका नाशिका कर्मी ॥ कौका नवसमरुदस
 वमरुध्वनी ॥ ८ ॥ कौर्कसऽयागददवी ॥ ॐ कौरुट्क सुवर्द्धेष्टमाविऽला लसु
 टयवथन्याना सैरुनियवलाकमा ॥ ९ ॥ कौका कौरुट्कऽसर्वद्वक्ष नाना
 गनियवलात्मिकऽनैऽकौका सऽवस्य कृद्रुद्धया गिनीनामहादय ॥ १० ॥
 हुं निसु त्वामहादवी सेनवनमहासना ॥ गमालिङ्ग विनिरिद्ध निर्गताः
 यवमध्वनी ॥ ११ ॥ घालकल्या प्रवक्तु जायागिनी गलमणि ग ॥ अहस्ता

वनदासीमक सुयवियहगालिनि॥ १२ ॥ धनदासयहसावयन्ननयथाव
 नासाहाहसाष्टगना सुजागिसमयता॥ १३ ॥ ककगिवावस्कावका
 माकादकनीधुता॥ किमिच मिमिववर्न गा नमि ॥ १४ ॥ धीरेनव
 उवाव॥ यिदिधवायसीनार्त यमिहववप्रदा॥ नमरेनववृषी वृजय
 त्यागिसानवा॥ १५ ॥ यकासमयनयननावाकेयनमध्वनी॥ नयामथक्क
 कामक्क सीरुविश्वनिनित्या॥ १६ ॥ अथदकवनादवी यूनननहीनलया
 नवैयददष्टवदन ननवावाख्यादसववी ॥ १७ ॥ ननत्यंरिथिष्टवीनि
 ॥ यत्कि

शुविनुस्मायरुकिदहासर्वान्कामानहयानियनर्गद्वयमानव॥ १८
 ॥ नविष्यंक्रुष्टमतदह नवमानयवर्कत ननरुवांधयसुस्य नाकार्यमन
 लरुथगा॥ १९ ॥ वृष्णसकयथागागच मंन्याकगान्यमथि वीयवीगा
 निगान्यस्य ॥ २० ॥ ननरुवांधयसुस्य नाकार्यमन
 गुकिनादवीसीयुर्ग्ययकन गधयव्यादिसनन॥ २१ ॥ नवक्षानुय०५
 युया०यद्वासमाहिनासादिरेणवकालन ॥ २२ ॥

अथ जम्भदिनयुन्य, द्यागकालयथेत्तन। सदा ध्यायितुं वक्ष्यामि नयसस्वीचर
वत्सदा॥ १७ ॥ जम्भदिनयुन्य, य० नादवनध्यगि। यनुनन्निस्त्रिगि
सु, लु, यनदवसन्निधौ॥ १७ ॥ नननुसाकाडागर्ण, कदाचिद्वियजाय
नानवाग्नोयजलसु लु, ननवस्यवथायथा॥ १८ ॥ नर्वयुलावासादवीश्य
यदध्यायनजगत्॥ १८ ॥ नननुसाकाडागर्ण, कदाचिद्वियजाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ निर्वर्णं निर्विकल्पं निवृत्तमसंख्यं निर्विकारं नन्दनं
कूंकानं वज्रदंष्ट्रं द्रुमवहनयनं शिखण्डाक्षं सावीर्यं कल्पावधनं नमो नमः ॥

टिगममूर्खं न वंशुलया निखर्वा गंधामनीलं उमत्रकसहितं कुरुया
 लनमासि ॥ १ ॥ नकास्वर्नकलनयिद्भुजकलायं दालावलीछाटिलदण्ड
 रंयवणुं सूर्याणुघ्नो गकनकाचलधृंगलगीनीमर्गवत्कृताथमहीनमासि ॥ २
 ॥ यस्याश्च ननविधिना किमपीहलाकं कर्मयुग्मं कुरुलनामसिद्धिं समसी ॥ गत्स
 र्वदासकलसाधकविनितार्थं विनामनिकूलगणाधेयविद्वसमि ॥ ३
 ॥ खझानीवुवानलदुगमनीहंससिनामुन्दनी सादात्सुवकमललुद्धनः
 कनीकल्याणकालकली सुधेगादयिकाश्रुनादयिदनायीनासदाः

[illegible][illegible]

लनि। कन्दायीग विष्टुष्टु सदनिके ४ वीता सदा ४ सावदा ४ गान्धवी स
गगनमासि गिर सास सावभभादनी ॥ ९ ॥ वाम्रुमवल वलुस
पुदत्तनी सारीषणीरासनी सादूलाजिन खप्रयदरु लर्क शकि
४ मूमुहिका। यागभामल रिष्ठिया लधनृषरुग क सा धात्रिणी
गान्धवी सगगनमासि गिर सा ४ रागागिनी नागिनी ॥ १० ॥ आगशा
उवमश्चनी सुववनी सगमसिद्धि कनी ४ यक्षि सुनिदव किन्नवगले
४ सयुजिता ४ सर्वदा ४। जागियम्यक कर्षिकावकुटर्ज ४ युना ४

गतामाद्रया गान्धवी सगगनमासि गिर सा लक्ष्मीयगाथा दला ॥
११ ॥ यी १० मक्ष निवागिनारुगवगीथगा नूध सुन्दवि ४ वका ॥ इष्टुः
नका दददधगि ४ ससावसावयदा। वक्षाय लु सुवद किन्नवगलेः
४ सयुजिता सर्वदा गान्धवी सगगनमासि गिर सा कामार्थसिद्धि यदा ॥
१२ ॥ अस्वयुष्टगरीयद रुगवगीथगन्य नूवात्मका लान्धवावदूला गः
थाहनिहो वक्षामनी चित्तय। तासु हेनव यक्षु वीगनूगर्म घीयागिलिय
४ कवदा कथा समानी वीषट्क ममल मीया उमिल्यका ॥ १३ ॥